पाठ 3

जीवन का सही अर्थ क्या है?

इस पाठ में आप पढ़ेंगे

- आप क्यों जन्मे थे?
- आप किस प्रकार से परमेश्वर के स्वरूप में हैं?
- आप किस प्रकार से परमेश्वर के स्वरूप में नहीं हैं?
- आप किस प्रकार के व्यक्ति बनना चाहते हैं?
- आप किस प्रकार जानेंगे कि आप परमेश्वर की संतान हैं?

भाग 1

आप क्यों जन्मे थे?

आपको जानना आवश्यक है

उस व्यक्ति के **विषय** में आप क्या सोचेंगे जो भूसे से बनी टोपी से भोजन पकाए? या शीशे की बोतल को हथौड़े के समान प्रयोग करे? या सही अर्थ समझे बिना, पूरा जीवन ही समाप्त कर दे?

यह जीवन जिस कार्य के लिए है यदि उसमें प्रयोग न करें। तो वैसा ही है जैसे भूसा की टोपी आग पर धर दी जाए। या बोतल को हथौड़ा समझा जाए। हम असन्तोष में स्वयं को नाश कर डालेंगे।

परमेश्वर ने आपके जीवन के निमित्त एक उपाय और योजना बनाई है। पृथ्वी पर उसने एक काम

आपके लिए रखा है। स्वर्ग में आपके लिए एक अद्भुत भवन तैयार किया है। परमेश्वर की योजना के अन्तर्गत ही आप जन्मे थे।

आप परमेश्वर की सन्तान होने के लिए जन्मे थे

आपने सीखा है आप इसलिए सृजे गए कि आप परमेश्वर का आनंद पाएँ, उसकी सन्तान बनें, उसका प्रेम पाएँ और उससे प्रेम करें। आप जो कुछ करें, अगर संगति ईश्वर से नहीं तो आपने जीवन का मुख्य उद्देश्य खो दिया है।

भजनसंहिता 16:10 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा, तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहेगा।

आप परमेश्वर की समानता में बढ़ने के लिए जन्मे थे

परमेश्वर की संतान होने के कारण, पृथ्वी का जीवन पाठशाला के समान है, ताकि आप अनन्त के लिए तैयार हो सकें आपके अनुभव आपके लिए पाठ हैं। आप उस कार्य के लिए तैयार हो सकें जो परमेश्वर के राज्य में आपको करना होगा। जो समस्याएँ और दूसरे कष्ट सहते हैं वे आपको धीरज, **विश्वास** और आज्ञाकारी होना सिखाते हैं। वे आपकी आत्मिक उन्नति के लिए हैं ताकि आप अपने स्वर्गीय पिता के समान हों। परमेश्वर आपको **विश्वासयोग्य व्यक्ति** बनाना चाहता है ताकि अभी और आनेवाले जगत में प्रयोग कर सके।

2 तीमुथियुस 2:12 यदि हम धीरज से सहते रहेंगे तो उसके साथ राज्य भी करेंगे।

आप परमेश्वर का कार्य करने के लिए जन्मे थे

आप जब भी जन्मे थे, जो भी थे, जहां भी थे, इसलिए थे ताकि अपने कुटुम्ब, अपने समुदाय, अपने राष्ट्र और **विश्व** के लिए आशीष बन सकें। परमेश्वर चाहता है आप उसके साझीदार हों। उसका कार्य करें परमेश्वर आपकी सहायता करेगा ताकि दूसरों को यीशु मसीह के पास **लाएँ** और उत्तम जीवन **बिताएँ।**

इफिसियों 2:10 क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

आपका काम

- परमेश्वर ने मुझे इसलिए जीवन दिया ताकि उसका.....होऊँ, उसकी.....**बढ़ूं** और.....उसके साथ साझीदार होऊँ।

- स्वयं से पूछें : क्या वास्तव में परमेश्वर मेरे जीवन से प्रसन्न होता है?
- क्या मैं दुःखों को धीरज और चरित्र की उन्नति का अवसर मानता हूँ?
- दूसरों की सहायता में जो कुछ कर सकूँ क्या मैं करता हूँ?

- क्या मै इस तरह रहता हूँ जैसे मृत्यु ही सबका अन्त है, या जीवन का प्रयोग अनन्त की तैयारी के लिए करता हूं?

- क्या मैं परमेश्वर की संगति से आनन्दित हूँ?
- जिस कार्य के लिए मैं जन्मा, उसे करता हूँ, या भूसे की टोपी को भोजन बनाने का पात्र बनाता हूँ?

आप किस प्रकार से परमेश्वर के स्वरूप में हैं?

परमेश्वर ने आपको आत्मा दिया जो उसकी समानता में था

परमेश्वर ने मिट्टी से आदम की देह रची, पृथ्वी के अन्य जीवधारियों के समान सांसारिक स्वभाव दिया। इसी से आपने सांसारिक स्वभाव पाया। परन्तु आदम का भीतरी जीवन, उसकी आत्मा, परमेश्वर की श्वास से आई। आदम की आत्मा परमेश्वर के समान थी। आपकी आत्मा भी कई प्रकार से परमेश्वर के समान है।

याद कीजिए

उत्पत्ति 1:26; 2:7 फिर परमेश्वर ने कहा हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ। यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।

आपकी आत्मा कई प्रकार से परमेश्वर की समानता में है

यह **विशेष** आत्मा आपको पशुओं से भिन्न बनाता है। हम इसको मनुष्य के अन्दर परमेश्वर का स्वरूप कहते हैं।

परमेश्वर के स्वरूप को स्वयं में, आप निम्न रूप से देख सकते हैं:

- आपका नैतिक स्वभाव: सही और गलत की पहिचान।

- आपका सौन्दर्य प्रेम का स्वभाव : सुन्दरता से प्रेम।
- आपका बौद्धिक स्वभाव : सत्य जानने की इच्छा, तर्क की योग्यता, भाषण और संचार साधन।
- आपका आत्मिक स्वभाव : उपासना की इच्छा और परमेश्वर के साथ संगति की योग्यता।
- आपका रचनात्मक स्वभाव : अपने आस पास के सुधार की इच्छा। मनुष्य गगनचुम्बी भवन, नदियों पर मार्ग बनाता है, विद्युत का प्रयोग और मशीनों की खोज करता है ताकि उसके लिए कार्य करें। संगीत, कला, सुन्दर भवन, कविता, गीत, चलचित्र और सब प्रकार की हस्तकला में सुन्दरता पैदा करता है।

आपको ये गुण परमेश्वर के स्वभाव से प्राप्त हुए हैं, जो पशुओं से आपको बिल्कुल भिन्न करते हैं। स्पष्ट करते हैं कि आप परमेश्वर की सन्तान बनने के लिए जन्मे थे। पशुओं के समान खुद की मनमानी करने के लिए नहीं जन्मे थे।

आपका काम

- कहाँ से मनुष्य को यह स्वभाव मिला, पशुओं से या परमेश्वर से?....................।
- हम मनुष्य में परमेश्वर के स्वरूप के गुण उसके सौन्दर्य प्रेम में देखते हैं। ....सुन्दर.........**स्वभाव। तर्क का गुण या बौ............स्वभाव; खोज या** ए................स्वभाव: सही और गलत की................स्वभाव: परमेश्वर की खोज................स्वभाव

इन पांचों गुणों में से प्रत्येक पर विचार कीजिए, कल्पना कीजिए पशु सूची में दिये गए ये काम करते हैं। उदाहरण के लिए सोचिए बन्दर कविता लिख रहा है, या एक सुअर वायुयान की खोज कर उसे उड़ाता है। यह तो उपहास है। तो फिर अपने स्वभाव के हर भाग के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कीजिए जो आपको परमेश्वर के समान बनाता है।

भाग 3

आप किस प्रकार से परमेश्वर के स्वरूप में नहीं हैं?

आपकी भौतिक देह है

परमेश्वर असीमित, अनन्त, सर्वसामर्थी आत्मा है। जो समय और दूरी में सीमित नहीं है। वह कभी न मरेगा। आपकी आत्मा देह में निवास करती है। देह की शक्ति सीमित है, एक स्थान पर ही सिर्फ एक समय पर पहुंच सकती है और किसी दिन मर जाएगी। तोभी यह उत्तम दान परमेश्वर ने आपको दिया है। इससे परमेश्वर की सेवा आप कई तरह से कर सकते हैं। आप में सिर्फ आत्मा होती तो इतनी सेवा न कर पाते। देह की उचित रक्षा करें क्योंकि आपकी आत्मा का निवास है। परमेश्वर की सेवा के लिए मन्दिर है।

1 कुरिन्थियों 6:19,20 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुममें बसा हुआ है। इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

कुछ लोग बुरे कामों के लिए अपनी देह को दोष देते हैं। अपनी देह को ताड़ना देते हैं ताकि स्वयं को अच्छा बना सकें। आपकी यह देह, अपने में न तो अच्छी

है और न बुरी है। यह तो मशीन के समान जिसे आपकी आत्मा चलाती है। आपकी आत्मा काम का फैसला करती है और देह उसे पूरा करती है। इस देह को आप चाहें तो अच्छे या बुरे काम में, शैतान या परमेश्वर के लिए प्रयोग कर सकते हैं।

रोमियों 12:1 अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ।

निश्चय कीजिये कि आपकी देह आपकी आत्मा के वश में है। यह शरीर अच्छा सेवक किन्तु असहाय **स्वामी** है। अपने जीवन में पहला स्थान यदि देह की पसन्द और नापसन्द को देंगे तो आपके सामने संकट है। आदतों की दासी होकर स्वास्थ्य नष्ट करेगी और पाप की गहराई में डाल देगी। यदि आत्मा की आवश्यकताओं की उपेक्षा करेंगे, पहला स्थान शारीरिक सुखों को देंगे, तो परमेश्वर की समानता हममें घटती जाएगी।

पाप ने आपका स्वभाव नष्ट कर दिया है

पाप ने परमेश्वर के स्वरूप को, आप में धुँधला कर दिया है। मनुष्य यदि परमेश्वर को अपना जीवन नहीं सौंपता, खुद ही उसे सुधारने की कोशिश करता है तो बिगड़ता ही जाता है।

गलतियों 5:19-21 शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् **व्यभिचार**, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह. मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और

और काम हैं, इनके विषय में तुमको पहले से कह देता हूँ, जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

आप स्वयं उत्तम नहीं बन सकते हैं

हर एक उत्तम वस्तु परमेश्वर से मिलती है। अगर उसे अपने जीवन में नहीं आने देंगे, तो उत्तम नहीं बन सकते हैं। जब परमेश्वर का पवित्र-आत्मा आपमें बसे, आपको सुधारे, तभी आप उत्तम होंगे।

रोमियों 7:18-20, मैं जानता हूँ कि मुझमें अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझमें है परन्तु भले काम मुझसे बन नहीं पड़ते। जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ वह तो नहीं करता परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूँ। परन्तु यदि मैं वही करता हूँ जिसकी इच्छा नहीं करता तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझमें बसा है।

आप परमेश्वर से इतने भिन्न हैं कि आपको फिर से बनाया जाना चाहिए

आपके स्वभाव की, मरम्मत करके, या उत्तम बनाने की कोशिश करके, या किसी गिर्जे की सदस्यता से, अच्छा नहीं बनाया जा सकता है। आपको परमेश्वर की आवश्यकता है जो आपका स्वभाव बदले, जैसा वह बनाना चाहे वैसा आपको बना सके। परमेश्वर को अपना स्वभाव, अपने जीवन में पुनः निर्माण करने दीजिए।

आपका काम

- इस भाग को फिर से पढ़िये, जिन बातों में आप परमेश्वर के समान नहीं हैं उन्हें खोजिये। जिस वस्तु को **अपने जीवन में नहीं** चाहते हैं उसके नीचे लकीर खींचिये।
- कौन अधिक **महत्वपूर्ण** है आपकी देह या आपकी आत्मा?.....

  किसे **अधिकार** रखना चाहिए?.....

  बिना बाहरी सहायता के क्या आप उत्तम बन सकते हैं?.....

भाग 4

आप किस प्रकार के व्यक्ति बनना चाहते हैं?

एक ही मिट्टी, सुअर लेटने का मैलाकुचैला कीचड़ या चीनी मिट्टी का सुन्दर पात्र, बन सकती है। स्वामी की इच्छा क्या है, इस पर, और कुम्हार की निपुणता पर, ही सब कुछ निर्भर है।

मनुष्य का स्वभाव यों ही छोड़ देने पर अत्यधिक बुरा हो जाता है। गन्दे, घृणात्मक विचारों से और दुष्कर्मों से यह मैलाकुचैला कीचड़ बन जाता है। परमेश्वर के हाथों में, जो महान रचियता है, आपका जीवन अति सुन्दर और लाभप्रद बन सकता है।

यिर्मयाह 18:4,6 जो मिट्टी का बासन वह बना रहा था वह बिगड़ गया तब उसने उसी का दूसरा बासन अपनी समझ के अनुसार बना दिया। यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार की नाईं तुम्हारे साथ क्या मैं

भी काम नहीं कर सकता। देख जैसे मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है वैसे ही.....तुम भी मेरे हाथ में हो।

आपका काम

- **क्या आप चाहते हैं परमेश्वर आपका जीवन फिर से बनाये?.....तो अपने शब्दों में उससे विनती करें।**
- **अगर आप पहले से ही मसीही हैं, सम्भवतः आप अपनी त्रुटियों से छुटकारा पाकर परमेश्वर की अधिक समानता में बनना चाहते हैं। यदि हां, तो परमेश्वर को बताइये और उसकी सहायता के लिए विनती कीजिये।**

भाग 5

आप किस प्रकार जानेंगे कि आप परमेश्वर की संतान हैं?

जिस क्षण आप यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता स्वीकार करते हैं परमेश्वर आपको अपना पुत्र-पुत्री स्वीकार करता है। तीन प्रकार से निश्चय रूप में वह आपको बताता है:

- अपने **वचन** के द्वारा **वचन** में इसकी पुष्टि है।
- पवित्र आत्मा की साक्षी के **भीतरी आश्वासन** के द्वारा।
- आपके जीवन में परिवर्तन के द्वारा।

1 यूहन्ना 5:10-12 जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है वह अपने ही में गवाही रखता है। परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है।

रोमियों 8:16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं।

1 यूहन्ना 3:14 हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं।

आपका काम

- क्या आपने यीशु को अपना मुक्तिदाता स्वीकार किया?
- क्या आपको ज्ञात है कि आप परमेश्वर के पुत्र/पुत्री हैं?
- परमेश्वर का **वचन** इस **विषय** में जो बताता है उस पर **विश्वास** कीजिये। उसे धन्यवाद दें कि आपको अपनी सन्तान बना लिया है।